



भारत का डेयरी क्षेत्र

पोषण एवं आय सुरक्षा का आधार तैयार करना

प्रमुख बिंदु

1. भारत दुनिया भर में दुग्ध उत्पादन में पहले स्थान पर बना हुआ है और कुल वैश्विक आपूर्ति में एक चौथाई का योगदान करता है।
2. वर्तमान में डेयरी भारत का सबसे बड़ा कृषि उत्पाद है जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5 फीसदी का योगदान दे रहा है और इसमें 8 करोड़ से ज्यादा कृषकों को प्रत्यक्ष रोजगार मिला हुआ है।
3. विगत 10 वर्षों में दुग्ध उत्पादन **63.56%** बढ़कर 14.63 करोड़ टन से 23.93 करोड़ टन हो गया है। प्रति व्यक्ति आपूर्ति **48%** बढ़कर 2023-24 में 471 ग्राम प्रति दिन हो गयी है।
4. वर्ष 2024-25 में देश भर में **565.55 लाख कृत्रिम गर्भाधान** करवाए गए।

परिचय

पंजाब के रूपनगर में अजौली गांव की रहने वाली श्रीमती गुरविंदर कौर ने डेयरी को अपनी तरक्की का जरिया बनाया। वर्ष 2014 में डेयरी विकास विभाग से प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने एक होलस्टीन फ्रीजीयन गया से शुरुआत की। होलस्टीन बड़े व मजबूत पशु होते हैं जिनके शरीर पर काले व सफेद या लाल एवं सफेद चकते होते हैं। इस ब्रीड की उत्पत्ति हालैंड में हुयी थी। लगन और



वैज्ञानिक तरीकों का पालन करते हुए, उन्होंने अपने डेयरी व्यवसाय को बढ़ाया और आज उनके पास **4 होलस्टीन फ्रीशियन** दुधारू पशु हैं, जिनसे वह हर दिन लगभग **90 लीटर** दूध का उत्पादन

करती हैं। वह दूध वेरका डेयरी और स्थानीय ग्राहकों को बेचकर एक स्थिर आय प्राप्त कर रही हैं, जिससे उन्हें पहचान भी मिली है। उन्होंने चारा काटने की मशीन, दूध निकालने की मशीन और साइलेज यूनिट में भी निवेश किया, यह दर्शाता है कि कैसे तकनीक मुनाफे को बढ़ा सकती है। साइलेज एक तरह का फर्मेंटेड हरा चारा है जो साल भर पशुओं के लिए पौष्टिक भोजन सुनिश्चित करता है। एक शिक्षिका के आशाजनक करियर को छोड़कर एक सफल डेयरी किसान बनने का उनका फैसला यह साबित करता है कि सही ज्ञान, परिवार के सहयोग और दृढ़ संकल्प के साथ, एक महिला किसान भी एक समृद्ध डेयरी उद्यम बना सकती है और कई अन्य लोगों को प्रेरित कर सकती है।

दूध पोषण सुरक्षा के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उच्च गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन और कई तरह के आवश्यक पोषक तत्वों का एक समृद्ध मिश्रण प्रदान करता है। इसे लगभग एक संपूर्ण आहार माना जाता है, जो प्रोटीन, खनिज, विटामिन, लैक्टोज और दूध वसा की आपूर्ति करता है। डेयरी उत्पाद सभी आयु वर्ग के लोगों को पोषण देते हैं, जिससे वृद्धि, हड्डियों का स्वास्थ्य और एक सक्रिय जीवनशैली को बढ़ावा मिलता है। कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर दूध, खासकर बचपन के दौरान स्वस्थ विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि ये पोषक तत्व आसानी से शरीर में अवशोषित हो जाते हैं।

भारत पिछले कई वर्षों से वैश्विक दूध उत्पादन में पहले स्थान पर बना हुआ है और दुनिया की कुल आपूर्ति में लगभग एक-चौथाई का योगदान देता है। डेयरी क्षेत्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सबसे मजबूत स्तंभों में से एक बन गया है और यह खाद्य और पोषण सुरक्षा का केंद्र बन गया है। वर्तमान में, डेयरी भारत का सबसे बड़ा कृषि उत्पाद है, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5 प्रतिशत का योगदान देता है और 8 करोड़ से अधिक किसानों को सीधे रोजगार देता है (राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के अनुसार)। यह क्षेत्र 8 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को प्रभावित करता है, जिनमें से कई छोटे और सीमांत किसान हैं। दुग्ध उत्पादन और संग्रहण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो डेयरी क्षेत्र को समावेशी विकास का एक मजबूत वाहक बनाती है।

क्षेत्र की प्रगति: एक परिदृश्य

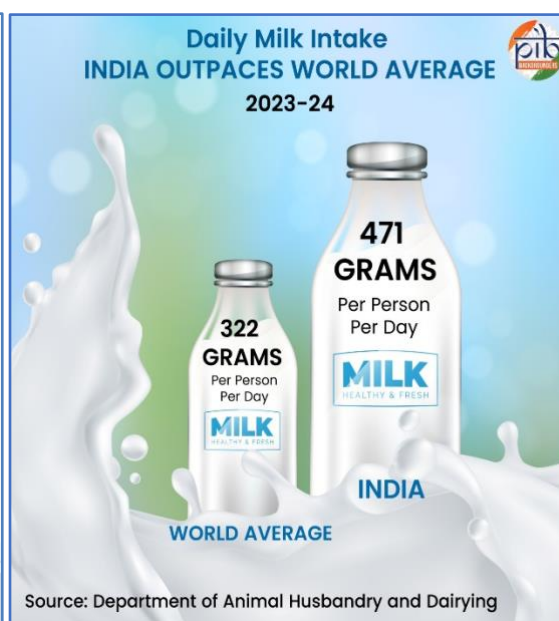
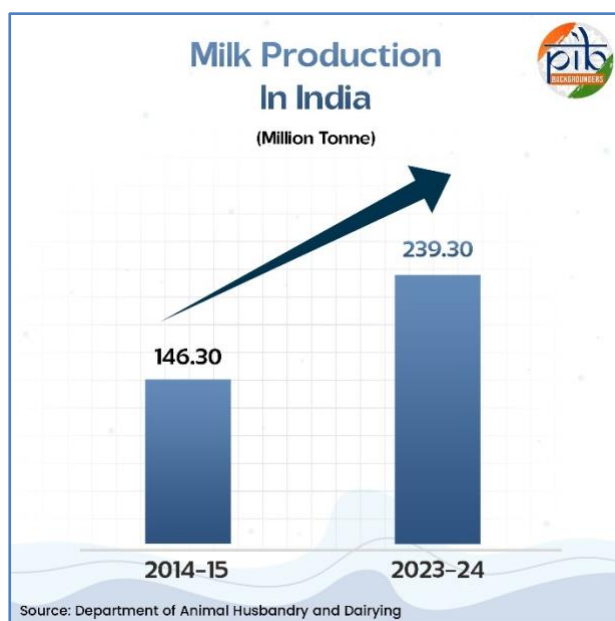
समग्र उत्पादन

पिछले दशक में, भारत के डेयरी क्षेत्र ने उल्लेखनीय वृद्धि दिखाई है। दूध का उत्पादन 2014-15 में 146.30 मिलियन टन से बढ़कर 2023-24 में 239.30 मिलियन टन हो गया है, जिसमें 63.56% की बढ़ोतरी हुई है। इसका मतलब है कि देश ने पिछले 10 वर्षों में 5.7% की प्रभावशाली

वार्षिक वृद्धि दर बनाए रखी है। खाद्य और कृषि संगठन के आँकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत दुनिया में सबसे बड़ा दूध उत्पादक बना हुआ है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, पाकिस्तान, चीन और ब्राजील जैसे देशों से कहीं आगे है।

प्रति व्यक्ति उपलब्धता

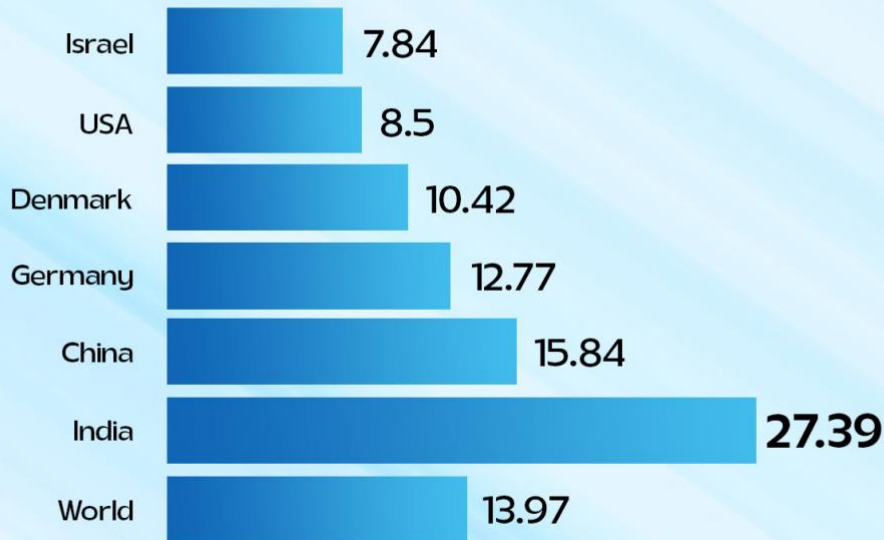
पिछले दशक में, भारत में प्रत्येक व्यक्ति के लिए दूध की उपलब्धता में तेज़ी से वृद्धि हुई है। प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता में 48% की बढ़ोतरी हुई है, जो 2023-24 में प्रति दिन 471 ग्राम से अधिक हो गई है। यह 322 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रति दिन के विश्व औसत से काफी अधिक है।



पशुओं की आबादी में वृद्धि

भारत की 303.76 मिलियन पशुओं की आबादी, जिसमें मवेशी, भैंस, मिथुन और याक शामिल हैं, डेयरी उत्पादन और कृषि में हल चलाने जैसी शक्ति दोनों की रीढ़ हैं। 74.26 मिलियन भेड़ें और 148.88 मिलियन बकरियां भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, खासकर शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में दूध उत्पादन में। 2014 और 2022 के बीच, भारत ने पशुओं (गाय), भैंस, आदिमें (वर्ष/किग्रा) की उत्पादकता (27.39% की वृद्धि दर्ज की, जो चीन, जर्मनी और डेनमार्क से भी आगे, दुनिया में सबसे अधिक है। यह वृद्धि 13.97% के वैश्विक औसत से कहीं ज़्यादा है।

Increase in Productivity of bovines (kg/year) from 2014 to 2022



Enhancement in productivity Comparison

मवेशियों की आबादी में यह वृद्धि **राष्ट्रीय गोकुल मिशन** जैसी योजनाओं का परिणाम है, जो मवेशियों के प्रजनन, आनुवंशिक सुधार और नस्लों की उत्पादकता बढ़ाने पर केंद्रित है। इसके अलावा, **पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एलएचडीसीपी)** के तहत, किसानों के द्वार पर पशुओं के इलाज के लिए पशु चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने हेतु मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयाँ (एमवीयू) स्थापित की गई हैं। इन सेवाओं में रोग निदान, उपचार, टीकाकरण, छोटे सर्जिकल हस्तक्षेप, ऑडियो-विजुअल एड्स और विस्तार सेवाएँ शामिल हैं।

इसके अलावा, स्थायी पशुधन स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद को आधुनिक पशु चिकित्सा पद्धतियों के साथ एकीकृत किया जा रहा है। **एथनो वेटरनरी मेडिसिन (ईवीएम)** एंटीबायोटिक प्रतिरोध से निपटने के लिए एक लागत प्रभावी और पर्यावरण-अनुकूल विकल्प है। बोवाइन मैस्टाइटिस के इलाज में इसका उपयोग सिंथेटिक दवाओं पर निर्भरता कम करने और स्वस्थ, अधिक लचीले डेयरी प्रणालियों का समर्थन करने में आशाजनक है।

सहकारी डेयरी नेटवर्क की ताकत

भारत में सहकारी डेयरी क्षेत्र बहुत बड़ा और सुव्यवस्थित है। 2025 तक, इसमें 22 मिल्क फेडरेशन, 241 जिला सहकारी संघ, 28 मार्केटिंग डेयरियां और 25 मिल्क प्रोड्यूसर संगठन (एमपीओ) शामिल हैं। ये सभी मिलकर लगभग 2.35 लाख गांवों को कवर करते हैं और 1.72 करोड़ डेयरी किसान इसके सदस्य हैं।

डेयरी विकास के केंद्र में महिलाएं

भारत के डेयरी क्षेत्र की एक खास विशेषता महिलाओं की सशक्त भूमिका है। डेयरी फार्मिंग में लगभग 70% कार्यबल महिलाएं हैं, और लगभग 35% सहकारी डेयरी में सक्रिय हैं। पूरे देश में, 48,000 से अधिक महिला नेतृत्व वाली-डेयरी सहकारी समितियां गाँव स्तर पर काम कर रही हैं, जो ग्रामीण समुदायों में समावेशी विकास और सशक्तिकरण ला रही हैं।

एनडीडीबी डेयरी सर्विसेज़ (एनडीएस) ने भी 23 मिल्क प्रोड्यूसर संगठनों का सहयोग किया है, जिनमें से 16 पूरी तरह से महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे हैं। इनमें निदेशक मंडल में सभी उत्पादक निदेशक महिलाएं हैं, जो उन्हें इस क्षेत्र में समावेशी विकास के लिए आदर्श बनाती हैं। ये एमपीओ 35,000 गाँवों में लगभग 1.2 मिलियन दूध उत्पादकों को एक साथ लाते हैं, जिससे सहकारिताएँ देश की डेयरी वृद्धि का एक मजबूत स्तंभ बन जाती हैं।

इस परिवर्तन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऑल वीमेन श्रीजा मिल्क प्रोड्यूसर संगठन को शिकागो में वर्ल्ड डेयरी समिट में अंतर्राष्ट्रीय डेयरी फेडरेशन से डेयरी इनोवेशन अवार्ड मिला, जो महिलाओं को सशक्त बनाने के उनके महत्वपूर्ण काम के लिए एक सम्मान है।

भारत क्यों अगुवाई कर रहा?

भारत का डेयरी क्षेत्र लंबे समय से ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ रहा है। इसकी ताकत छोटे किसानों के मॉडल में निहित है, जो लाखों किसानों को सहकारी नेटवर्क के माध्यम से जोड़ता है। समय के साथ, इस दृष्टिकोण ने पूरे देश के परिवारों के लिए स्थिर आय और बेहतर पोषण सुनिश्चित किया है। किसानों को ध्यान में रखकर बनाई गई सरकारी योजनाओं ने इस गति को और बढ़ाया है। प्रजनन, चारा प्रबंधन और पशु स्वास्थ्य के लिए दिए गए समर्थन ने उत्पादकता बढ़ाने और गुणवत्ता में सुधार करने में मदद की है। प्रशिक्षण, बुनियादी ढाँचे और बाज़ार से जुड़ाव ने भी किसानों के लिए अवसरों का विस्तार किया है। भारत अब दुनिया में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता बन गया है। प्रजनन, पोषण और स्वास्थ्य प्रबंधन में नई तकनीकों के साथ, यह क्षेत्र विकास के अपने अगले चरण के लिए तैयार है। ये उन्नति भारत के लिए वैश्विक डेयरी मूल्य श्रृंखला में एक मजबूत स्थान बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारत के डेयरी क्रांति की यात्रा

भारत की आधुनिक डेयरी यात्रा की शुरुआत 1965 में आणंद में **राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी)** की स्थापना के साथ हुई। इसका उद्देश्य गुजरात के खेड़ा जिले के डेयरी किसानों को **खेड़ा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड** में संगठित करने के आणंद मॉडल को पूरे देश में दोहराना था, जो बाद में **अमूल** का अग्रदूत बना। **वर्गीज़ कुरियन** को एनडीडीबी का पहला अध्यक्ष बनाया गया था। **ऑपरेशन फ्लड** 1970 में शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य देश भर के दुग्ध उत्पादक क्षेत्रों में आनंद-पैटर्न सहकारी समितियों की स्थापना करना था, जहाँ से इन समितियों द्वारा एकत्र किए गए दूध को शहरों में पहुँचाया जा सके। इसने आखिरकार भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बना दिया। एनडीडीबी को बाद में 1987 में संसद के एक अधिनियम के माध्यम से **राष्ट्रीय महत्व का संस्थान** घोषित किया गया।

एनडीडीबी ने देश भर में प्रमुख सरकारी कार्यक्रमों को लागू करके इस मिशन को आगे बढ़ाया है। राष्ट्रीय डेयरी योजना चरण और राष्ट्रीय गोकुल मिशन जैसी पहलों ने किसानों को केंद्र में रखा है और सहकारिता को मूल सिद्धांत बनाया है। राष्ट्रीय डेयरी योजना चरण I को उल्लेखनीय सफलता के साथ लागू किया गया था और इसे "उच्च स्तर पर संतोषजनक" की रेटिंग मिली, जो विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं को दी जाने वाली सर्वोच्च ग्रेड है।

Timeline of Schemes in Dairy Sector



Source: Department of Animal Husbandry and Dairying

राष्ट्रीय गोकुल मिशन - डेयरी क्षेत्र के समर्थन के लिए एक महत्वपूर्ण पहल

पशुपालन और डेयरी विभाग 2014 से **राष्ट्रीय गोकुल मिशन (आरजीएम)** को लागू कर रहा है, जिसका उद्देश्य स्वदेशी गाय और भैंस की नस्लों का विकास और संरक्षण करना, मवेशियों की आबादी में आनुवंशिक सुधार करना और दूध उत्पादन तथा मवेशियों की उत्पादकता बढ़ाना है। **मार्च 2025** में, पशुधन क्षेत्र के विकास को और तेज़ करने के लिए संशोधित राष्ट्रीय गोकुल मिशन की शुरुआत की गई है। इसे **विकास कार्यक्रम योजना** के केंद्रीय क्षेत्र के घटक के रूप में **₹1000 करोड़** के अतिरिक्त परिव्यय के साथ लागू किया जा रहा है, जिससे **2021-22 से 2025-26 तक 15वें वित्त आयोग** के चक्र के लिए कुल आवंटन **₹3400 करोड़** हो गया है।

यह योजना राष्ट्रीय गोकुल मिशन की पिछली गतिविधियों को जारी रखती है। इसका ध्यान सीमेन स्टेशनों को मजबूत करने, कृत्रिम गर्भाधान नेटवर्क का विस्तार करने, और लिंग-वर्गीकृत सीमेन के माध्यम से सांड उत्पादन तथा त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रमों को लागू करने पर है।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन और सरकार के अन्य प्रयासों के लागू होने से, पिछले दस वर्षों में दूध उत्पादन में 63.56% की वृद्धि हुई है। साथ ही, पिछले दस वर्षों में उत्पादकता में भी 26.34% की वृद्धि हुई है।

कृत्रिम गर्भाधान कवरेज

कृत्रिम गर्भाधान दूध उत्पादन और मवेशियों की उत्पादकता में सुधार करने के लिए सबसे प्रभावी तकनीकों में से एक है। वर्तमान में, भारत में प्रजनन योग्य मवेशियों में से 33% इस विधि के माध्यम से कवर किए गए हैं। हालांकि, लगभग 70% पशुओं को अभी भी ऐसे सांडों से कृत्रिम गर्भाधान कराया जाता है जिनकी आनुवंशिक योग्यता अज्ञात है।

2024-25 में, देश भर में कुल 565.55 लाख कृत्रिम गर्भाधान किए गए। यह वैज्ञानिक प्रजनन प्रथाओं के विस्तार और पशुधन की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम (एनएआईपी)

राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम (एनएआईपी) ने हाल के वर्षों में शानदार प्रगति की है। इस कार्यक्रम के तहत, किसानों को उनके घर पर मुफ्त एआई सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं। अगस्त 2025 तक, इस कार्यक्रम में 9.16 करोड़ पशुओं को कवर किया गया है और 14.12 करोड़ कृत्रिम गर्भाधान किए गए हैं, जिससे 5.54 करोड़ किसानों को लाभ हुआ है।

उन्नत प्रजनन प्रौद्योगिकियाँ

उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए, 22 आईवीएफ लैब स्थापित किए गए हैं। 10.32 मिलियन से अधिक लिंग वर्गीकृत-सीमेन की खुराकें तैयार की गई हैं, जिनमें से 70 लाख खुराकों का उपयोग कृत्रिम गर्भाधान के लिए किया गया है। यह किसानों को अधिक मादा बछड़े प्राप्त करने और दूध उत्पादन को मजबूत करने में मदद करता है।

ग्रामीण भारत में बहुउद्देशीय एआई तकनीशियन (मैत्री)

प्रजनन सेवाओं को किसानों के करीब लाने के लिए, ग्रामीण भारत में बहुउद्देशीय कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियनों, जिन्हें मैत्री के नाम से जाना जाता है, की शुरुआत की गई है। इन तकनीशियनों को मान्यता प्राप्त संस्थानों में तीन महीने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और उन्हें आवश्यक उपकरणों के लिए ₹50,000 तक का अनुदान मिलता है। तीन साल बाद, वे लागत की वसूली के माध्यम से आत्मनिर्भर बन जाते हैं। पिछले चार वर्षों में, 38,736 मैत्री को नियुक्त किया गया है, और वे अब सीधे किसानों के घर पर सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

संतति परीक्षण एवं नस्ल बढ़ाना

दूध उत्पादन एक लिंगसीमित विशेषता है-, इसलिए एक सांड की आनुवंशिक योग्यता का मूल्यांकन उससे पैदा मादाओं के प्रदर्शन से किया जाता है। इस वैज्ञानिक प्रक्रिया को संतति परीक्षण कहा जाता है, जो सांडों की आनुवंशिक क्षमता का अनुमान लगाने में मदद करती है। **2021 से 2024** के दौरान, **3,747** संतान परीक्षित सांड-तैयार किए गए हैं, जबकि 5 साल का लक्ष्य **4,111** का है। इसके साथसाथ-, अच्छी गुणवत्ता वाले पशुओं की उपलब्धता को मजबूत करने के लिए **132 नस्ल बढ़ाने वाले फार्मों** को भी मंजूरी दी गई है।

भविष्य का विजन: श्वेत क्रांति 2.0

श्वेत क्रांति 2.0 के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) की शुरुआत 19.09.2024 को हुआ, और इसका औपचारिक शुभारंभ 25.12.2024 को किया गया। यह डेयरी सहकारी समितियों को मजबूत करने, रोजगार के अवसर पैदा करने और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक नई पहल है। श्वेत क्रांति 2.0 पहल को पांच साल की अवधि 2024-25 से 2028-29 तक लागू किया जाएगा। 2028-29 तक, डेयरी सहकारी समितियों द्वारा दूध की खरीद वर्तमान स्तर से बढ़कर **प्रतिदिन 1007 लाख किलोग्राम** तक पहुंचने की उम्मीद है। इस योजना में शामिल हैं:-

- i. **75,000 नई डेयरी सहकारी समितियों के गठन** के माध्यम से डेयरी सहकारी समितियों की कवरेज का विस्तार करना। प्रत्येक गांव में जहां अभी कोई सहकारी समिति नहीं है, वहां नई समितियां स्थापित करके महिला किसानों को संगठित डेयरी क्षेत्र में शामिल किया जाएगा।
- ii. 46,422 मौजूदा डेयरी सहकारी समितियों को मजबूत करना।
- iii. डेयरी क्षेत्र में स्थिरता और चक्रीयता लाना जिसके लिए तीन विशेष बहुराज्य सहकारी समितियों (एमएससीएस) का गठन किया जाएगा ताकि वे निम्नलिखित गतिविधियों को पूरा कर सकें: -
 - (क) पशुओं के लिए चारा, खनिज मिश्रण और अन्य तकनीकी इनपुट की आपूर्ति करना।
 - (ख) सहकारी प्रयासों के माध्यम से जैविक खाद उत्पादन और टिकाऊ अपशिष्ट उपयोग को बढ़ावा देना, जिससे प्राकृतिक खेती और चक्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान हो सके। इसमें गोबर और कृषि अपशिष्ट का उपयोग करके जैविक उर्वरक और बायोगैस में बदलना शामिल है, जो पर्यावरण-अनुकूल मृदा इनपुट और राष्ट्रीय स्थिरता लक्ष्यों की बढ़ती मांग के जवाब में है।
 - (ग) मृत पशुओं की खाल, हड्डियों और सींगों का प्रबंधन करना।

निष्कर्ष

भारत का डेयरी क्षेत्र ग्रामीण आजीविका की रीढ़ और समावेशी विकास का प्रतीक है। दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक होने के नाते, देश ने किसानों के नेतृत्व वाले सहकारिता, महिलाओं की भागीदारी और वैज्ञानिक पद्धतियों को मिलाकर उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। श्वेत क्रांति 2.0 की गति के साथ, यह क्षेत्र उत्पादकता को बढ़ावा देने, अवसरों का विस्तार करने और ग्रामीण समृद्धि को बदलना जारी रखने के लिए तैयार है।

संदर्भ

कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय

<https://agriwelfare.gov.in/Documents/Success-Story-For-approval.pdf>

पशुधन एवं डेयरी विभाग

<https://dahd.gov.in/sites/default/files/2025-05/Annual-Report202425.pdf>
<https://dahd.gov.in/sites/default/files/2025-08/DAHDDashboard-28-07-2025.pdf>
<https://dahd.gov.in/schemes/programmes/didf>
<https://www.dahd.gov.in/schemes/programmes/ahidf>

नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड

https://www.nddb.coop/sites/default/files/pdfs/NDDB_AR_2023_24_Eng.pdf
<https://www.nddb.coop/about/genesis/flood>
<https://www.nddb.org/about/genesis/ndpibrief>

असम सरकार

<https://dairy.assam.gov.in/portlets/farmers%E2%80%99-entrepreneurs%E2%80%99-corner>
<https://fpcapart.assam.gov.in/uploads/documents/Commercial%20Silage%20Making%20Unit-application-.pdf>

पीआईबी विज्ञप्तियां

<https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?id=154532&NotelId=154532&ModuleId=3>
<https://www.pib.gov.in/PressReleaseframePage.aspx?PRID=2114715>
<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetailm.aspx?PRID=2114745>
<https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?ModuleId=3&NotelId=154532&id=154532>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2115197>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2077029>
<https://www.pib.gov.in/PressReleaseframePage.aspx?PRID=1897077>
<https://www.pib.gov.in/PressReleaseframePage.aspx?PRID=2114715>
<https://www.pib.gov.in/PressReleaseframePage.aspx?PRID=1897077>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2158331>
<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetailm.aspx?PRID=2152464>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2112788>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2115197>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2158331>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2101849>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2158322>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2170427>

पीके/केसी/एसके